शोध मंथन, 2017 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 3.8942 (ICRJIFR)
UGC Aproved Journal No. 40908

वैश्वीकरण के आर्थिक आयाम

डॉ. पवन कुमार शर्मा

सार संक्षेप

समाज में जन्मने वाली कुछ चीजे, वस्तुएँ, विचार एवं व्यक्ति अपने विशेषताओं एवं योगदानों के कारण अनेक विषयों एवं स्थानों पर उपयोगी साबित होते हैं। इसी कारण इनका अध्ययन अलग–अलग विषयों में अलग–अलग दृष्टिकोण से किया जाता है। एक ऐसी ही अवधारणा वैश्वीकरण है, जिसके अन्य नाम जगतीकरण, भूमण्डलीकरण विश्वायन आदि है। यह वैश्वीकरण समाजशस्त्रीय, अर्थशास्त्रीय, राजनीतिशास्त्रीय तथा अन्य विषयों एवं इन विषयों के विशेषज्ञों के अध्ययन का एक प्रमुख बिन्दु है। वैश्वीकरण के आर्थिक आयाम की चर्चा में बहुराष्ट्रीय निगम, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, मुक्त–व्यापार समझौते, उदारीकरण, आउटसोर्सिंग इत्यादि प्रमुख बिन्दु है। इसके परिणामस्वरूप वैश्विक अर्थव्यवस्था का एकीकरण निरंतर गतिशील है जो पूरे विश्व को कि गांव के रूप में परिवर्तित कर रही है। इसलिए वैश्वीकरण को एक रोमांचक शब्द की संज्ञा दी जा सकती है, इसको लेकर "मुण्डे–मुण्डे मताभिन्ना" वाली स्थिति दृष्टिगोचर है।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

डॉ. पवन कुमार शर्मा,

वैश्वीकरण के आर्थिक आयाम,

शोध मंथन, दिस0 2017,
पेज सं0 53.57,
Artcile No. 10 (SM (650)

http://anubooks.com/?page_id=581

विश्वव्यापी आधार पर सामाजिक सम्बन्धों को घनिष्ठ बनाने का नाम ही वैश्वीकरण है। वैश्वीकरण के सम्बन्ध में जब हम विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तुत उनके विश्लेषणों का अध्ययन करते हैं तो उसमें पर्याप्त विविधता प्राप्त होता है। यह वैश्वीकरण कोई एक परिघटना नहीं है, यह तो अनेक अर्न्तसम्बंधित घटनाओं का गुच्छा है। इसके अनेक आयाम है यथा–आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक पारिस्थितिक आदि–आदि।

प्रमुख अर्थशास्त्री जोसेफ स्टिग्लिट्ज ने वैश्वीकरण को स्पष्ट करते हुए कहा कि "वैश्वीकरण दुनिया के विभिन्न देशों एवं लोगों का घनिष्ठ समन्वय है जो परिवहन एवं संचार की लागतों में लायी गयी भारी कमी के फलस्वरूप हो पाया है और इसके परिणाम स्वरूप वस्तुओं एवं सेवाओं के प्रवाहों में कृत्रिम रूकावटें समाप्त की गयी है और अपनी सीमा के परे लोगों का आना–जाना बढ़ा है।

जगदीश भगवती के अनुसार– "आर्थिक वैश्वीकरण में राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं को अंर्तराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में जोड़ने की प्रक्रिया समाविष्ट है और यह व्यापार, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (निगमों या बहुराष्ट्रीय उद्यमों) अल्पकालीन पूंजी प्रवाहों, श्रम तथा सामान्यतः मानव जाति के अंर्तराष्ट्रीय प्रवाह और टेक्नालाजी के प्रवाह द्वारा सम्पन्न किया जाता है।"

डा. विमल जालान ने वैश्वीकरण को परिभाषित करते हुए कहा कि "वैश्वीकरण शब्द का प्रयोग कई तरह से हुआ है। एक अर्थ तो शाब्दिक है कि अब राष्ट्रों के मध्य की दूरी बेमानी हो चुकी है। दुनिया काफी छोटी हो चुकी है और कोई भी देश अपना नुकसान करके शेष विश्व से खुद को अलग – थलग नहीं रख सकता है। वैश्वीकरण का दूसरा अर्थ ठीक उलटा निकाला जा रहा है। इसके अनुसार यह देशी हितों की जगह दूसरे देशों और बहुराष्ट्रीय निगमों के हितों को ऊपर रखने वाले नीतिगत बदलाव का नाम है।"

उपरोक्त परिभाषाओं के आलोक में यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण एक बहुआयामी एवं मुक्त कार्यप्रणाली है जो सम्पूर्ण विश्व को एक सूत्र द्वारा पिरोकर उनमें सामाजिक–सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं आर्थिक एकता बढ़ाने का प्रयास करती है।

मानव विकास प्रतिवेदन (2000) में इसकी निम्न विशेषतायें बतायी गयी है –

(1) नये बाजार
(2) नये उपकरण (प्रौद्योगिकी)
(3) नये कार्यकर्ता
(4) नये नियमाचार (विचार)

वैश्वीकरण का सबसे सामान्य प्रत्यय "आर्थिक एकीकरण" है जो अपने साथ अन्य समस्त क्षेत्रों को समाहित किये हुए है। इस बात की पुष्टि कार्ल मार्क्स के इस विचार से भी की जा सकती है जिसमें उन्होंने आर्थिक पक्षों को समाज की नींव कहा था और यह भी कहा था कि जब आर्थिक पक्षों (उत्पादन के साधन एवं तरीकों) में परिवर्तन आता है तो अन्य सभी पक्ष यथा राजनैतिक, सामाजिक – सांस्कृतिक आदि में स्वयं ही परिवर्तन को गति मिलती है। वैश्वीकरण वस्तुओं सेवाओं, तकनीकी पूँजी तथा श्रम आदि निर्बाध, सीमारहित प्रवाह की एक प्रक्रिया है जो व्यापार अवरोधों को

शून्य करने पर जोर देती है। इसके फलस्वरूप आजकल अनेक देशों के बाजार और उत्पादन पारस्परिक रूप से एक–दूसरे पर अधिकाधिक निर्भर रहते है। यह निर्भरता व्यापार एवं वस्तुओं के उत्पादन के साथ–साथ प्रौद्योगिकी ज्ञान और पूंजी के एक स्थान से दूसरे स्थान पर गमन के कारण है। लेस्ली स्क्लेअर ने वैश्वीकरण के आर्थिक पक्षों का विशद् वर्णन किया और बताया कि इस प्रक्रिया की धुरी पूंजीवादी व्यवस्था है और राष्ट्र राज्य तथा बहुराष्ट्रीय निगमों यथा मैक्डोनाल्ड, जनरल मोटर्स, सोनी, फोर्ड, कोकाकोला, पेप्सी आदि इसके कार्यकर्तागण है, जो इस प्रक्रिया के प्रसार में लगे हुए है।"

प्रबंधन सलाहकार और व्यापार गुरु केनेछी ओमे ने वैश्वीकरण के आर्थिक पक्ष पर प्रकाश डालते हुए कहा कि – "वैश्विक जगत में राजनीतिक सीमाओं का अब कोई महत्व नहीं रह गया है। यह सब कुछ वैश्विक अर्थव्यवस्था का प्रभाव है जिसका विकास संचार साधनों – (केबल, सैटेलाइट, टी०वी०, इंटरनेट और सस्ती एवं आसानी से उपलब्ध अंर्तराष्ट्रीय यात्रा) में तीव्र सुधारों से हुआ है। व्यक्ति अब विश्व नागरिक बन गया है। वे अब बढ़िया और सस्ती वस्तुएं खरीदना चाहते हैं। उनकी यह जानने में तनिक रुचि नहीं है कि ये वस्तुएं कहां बनती है।"

वैश्वीकरण को गति देने में बहुराष्ट्रीय निगमों Multi-National Companies (M.N.Cs.), प्रत्यक्ष विदेशी निवेश Foreign Direct Investment (F.D.I.), मुक्त व्यापार समझौते Free Trade Agreement (F.T.A) बढ़ता डिजीटलीकरण महत्वपूर्ण है। बहुराष्ट्रीय निगमों के कार्यक्षेत्र धीरे–धीरे पूरे विश्व में फैल चुके हैं। फलतः इनकी उत्पादन एवं विणपन की रणनीति अब वैश्विक रूप ग्रहण कर रही है। साथ ही वह सभी की रूचि एवं आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को नित–नये रूप में प्रदर्शित भी कर रही है। अन्य देशों में खुले इनके कार्यालयों एवं प्रतिष्ठानों में काम करने के लिए वहां के मूल निवासियों को यथोचित प्राथमिकता भी दी जा रही है जिससे उन्हें सस्ता श्रम एवं लोगों को रोजगार भी प्राप्त हो रहा है। **आर०जी० हैरिस** इन बातों का समर्थन करते हुए कहते है कि "वैश्वीकरण एक आर्थिक प्रक्रिया है जो माल एवं सेवाओं के उत्पादन, वितरण एवं विणपन का बहुता अंर्तराष्ट्रीयकरण है। हैरिस ने वैश्वीकरण को गतिशील बनाने के सम्बन्ध में नई प्रौद्योगिकी एवं आर्थिक एकीकरण को महत्वपूर्ण माना है।"

अन्य व्यापार समकायों की तरह ही बहुराष्ट्रीय निगम भी लाभ की इच्छा पर ही स्थापित एवं संचालित किये जा रहे हैं। इनका सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही प्रभाव है। कुछ विद्वानों का यह मानना है कि मानक, गुणवत्ता आदि में सुधार एवं उनकों अद्यतन करने में तथा मेजबान देश को पूंजी, तकनीकी एवं रोजगार के नये अवसर उपलब्ध कराने में इनकी भूमिका प्रभावशाली है। इसके अतिरिक्त मेजबान देश के घरेलू बाजार को इनसे प्रतिस्पर्धा भी प्राप्त होती है जो उनके लिए विकास की नयी सम्भावनाओं के द्वार खोलता है। ये बहुराष्ट्रीय निगम, पूंजी संचय एवं निवेश के माध्यम है। वैश्वीकरण को बढ़ावा देने में इनकी भूमिका किसी से छिपी नहीं है। इसलिए डेविड गार्डन वैश्वीकरण को किसी अभूतपूर्व विश्व कायांतरण के रूप में नहीं बल्कि पूंजी संचयन की दीर्घावधिक प्रक्रियाओं में एक अपेक्षाकृत अल्पावधिक दौर के रूप में स्वीकार करते है।

ये बहुराष्ट्रीय निगम मेजबान देश के लिए प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष विदेशी निवेश के माध्यम बनते है। विदेशी निवेश को आकर्षित करने एवं उसे प्राप्त करने की लालसा छोटे–बड़े सभी देशों

में दृष्टव्य है, जिसके लिए संगठित प्रयास किये जाते है। अनेक निवेश प्रोत्साहन सम्मेलनों का आयोजन आम बात हो गयी है। लगभग सभी राष्ट्राध्यक्ष अपने विदेशी दौरों में अपने साथ व्यापारिक प्रतिनिधि मण्डल अवश्य ले जाते हैं। इन दौरों में होने वाले समझौतों में आर्थिक पक्षों को समुचित स्थान दिया जाता है। कुछ विदेशी दौरे ऐसे भी हाल – फिलहाल सम्पन्न हुए है जहां विदेशी राष्ट्राध्यक्ष मेजबान देश के आर्थिक राजधानियों से अपनी यात्रा का प्रारम्भ करते है। कुछ ऐसे भी दौरे देखे जा सकते है जिनमें मेहमान राष्ट्राध्यक्ष मेजबान देश के महत्वपूर्ण व्यापारिक प्रतिष्ठानों की यात्रा करते है। इसके अतिरिक्त दोनों देश एक–दूसरे को व्यापार की शर्तों में छूट और अन्य आवश्यक सुविधायें उपलब्ध कराने का भी संकल्प प्रस्तुत करते हैं। व्यापार शर्तों में छूट तथा अनावश्यक कार्यवाहियों से बचाव को ही उदारीकरण भी कहा जा रहा है। वस्तुतः उदारीकरण एक अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु है जो वैश्विक आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देता है। इसमें देश अपने आयात–निर्यात, उत्पादन एवं अन्य सभी प्रक्रियाओं से सम्बंधित नियम–कानूनों को पहले की तुलना में न सिर्फ सरल बनाते हैं, वरन् अनावश्यक शर्तों के पालन से मुक्ति भी प्रदान करते हैं। उदारीकरण में आयात शुल्कों पर प्रतिबंधों में छूट विदेशी निवेश को प्रोत्साहन तथा विदेशी प्रौद्योगिकी एवं कौशलों के मुक्त परिवहन को समावेशित किया जाता है।

वैश्वीकरण के संदर्भ में "एकल खिड़की कार्यप्रणाली" (Single Window Operation) विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह एकल खिड़की नये औद्योगिक प्रतिष्ठानों की स्थापना से लेकर वर्तमान मे संचालित प्रतिष्ठानों को भी नौकरशाही के लालाफीताशाही रूपी झंझटों से मुक्ति देती है। अब किसी भी व्यक्ति को अपने देश या अन्य किसी देश में कोई औद्योगिक, व्यापारिक प्रतिष्ठान स्थापित करने हेतु अधिकतम कार्य आनलाइन कार्यप्रणाली द्वारा मध्यस्थों या दलालों का उन्मूलन पारदर्शिता एवं सहजता बढ़ी है।

इसके अतिरिक्त मुक्त व्यापार समझौते (Free Trade Agreement) भी वैश्वीकरण के एक महत्वपूर्ण कारक है जो विश्व को एक बाजार बनाने की ओर अग्रसर करते हैं। अब ये न सिर्फ दो देशों के मध्य ही कार्यान्वित हो रहे हैं बल्कि एक महाद्वीप के सभी देश इस सन्दर्भ में कार्य कर रहे हैं। साथ ही अलग–अलग महाद्वीपों के देशों के मध्य भी मुक्त व्यापार समझौते किये जा रहे हैं। नाफ्टा (उत्तरी अमेरिका मुक्त व्यापार समझौता) एवं अन्य समझौते उदाहरण के रूप में लिये जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त आसियान, यूरोपीय यूनियन, अरब लीग, ब्रिक्स आदि अनेक वैश्विक संगठन मुक्त व्यापार समझौतों की संख्या बढ़ाने को प्रयासरत है। वैश्वीकरण से सम्बंधित इन्हीं बिन्दुओं को स्पष्ट करते हुए थामस फ्रीडमैन ने कहा कि "वैश्वीकरण मुक्त व्यापार समझौते, इंटरनेट और वित्त बाजारों का वह निर्बन्ध संयोजन है जो सीमाओं को समाप्त कर विश्व को एक पृथक अर्थकर परन्तु नृशंस रूप से प्रतिस्पर्धात्मक पुण्यस्थल बनाता जा रहा है। इस अधिव्यापनकारी आर्थिक दृष्टिकोण का एक अन्य पहलू कुछ और नहीं बल्कि उदारीकरण ही है। उदारीकरण विभिन्न देशों के बीच आवागमन पर लगे सरकारी प्रतिबंधों को हटाये जाने की एक प्रक्रिया की ओर संकेत करता है ताकि एक नियुक्ति सीमारहित विश्व अर्थव्यवस्था का जन्म हो सके।"

उदारीकरण के अतिरिक्त उसका एक सहगामी बिन्दु निजीकरण वैश्वीकरण को गति देने में सहायक है। निजीकरण की प्रक्रिया पूंजीवाद से सम्बंधित है। इसमें लोग था उनका समूह उद्योग

स्थापित करते है। इसके लिए आवश्यक पूंजी एवं संसाधनों की व्यवस्था ये स्वयं करते है। और राज्य इन्हें आवश्यक प्रोत्साहन के रूप में अनेक सुविधाये दे रहे है। साथ ही अनेक जटिल प्रक्रियाओं एवं शुल्कों से मुक्ति भी इन्हें राज्य की तरफ से मिल रहा है।

इसके अतिरिक्त सार्वजनिक क्षेत्र में भी निजीकरण धीरे–धीरे अपने पावे जमा रहा है। यद्यपि इसका विरोध बहुत हो रहा है किन्तु यह उत्तरोत्तर जारी है। इसके अंर्तगत निम्न बिन्दुओं को स्थान दिया जाता है।

(1) पब्लिक लिमिटेड कम्पनी के सभी या कुछ शेयरों को सार्वजनिक बिक्री के लिए उपलब्ध कराना।

(2) निजी समूहों को सार्वजनिक क्षेत्र में प्रवेश

(3) कर्मचारियों की आपूर्ति एवं अन्य कार्यों के लिए ठेकेदारों से काम लेना।

(4) रुग्ण इकाईयों का पुर्नगठन या विखंडीकरण।

वैश्वीकरण के कारण अब सेवाओं का भी व्यापार सीमारहित हो चुका है। यह बहिर्सूत्रण (Outsourcing) के रूप में चर्चित है। बहिर्सूत्रण एक ऐसी कार्यविधि है जिसमें कोई प्रतिष्ठान अपने सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़े क्रियाकलापों को सम्पन्न करने का उत्तरदायित्व बाहरी एजेंसियों या कम्पनियों को सौंप देता है। ये प्रायः दूसरे देश की कम्पनियां या एजेसियां होती हैं। वास्तव में यह लागत बचाने के लिए किया जाता है जिससे कम्पनियों को तो लाभ होता ही है साथ ही साथ अन्य देश के उन लोगों को भी रोजगार प्राप्त हो जाता है जो इस कार्य को करते हैं। इससे उस देश में रोजगार की प्रतिस्पर्धा भी कम होती है। इन देशों को इसके सेवाओं के बहिर्सूत्रण में काल सेंटर बाजार सर्वेक्षण प्रबंधन एवं परामर्श, चालन (Animation) प्रतिलिप्यांतरण सेवाएं, आंकड़ों के संसाधन एवं उससे सम्बंधित अन्य क्रिया–कलाप सम्मिलित किये जाते हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण के आर्थिक आयाम विस्तृत एवं प्रभावशाली है। इससे जुड़ी विभिन्न अवधारणाएं एवं प्रक्रियायें मानव कल्याण हेतु प्रयासरत हैं। यह वही प्रक्रिया है जिसने सम्पूर्ण पृथ्वी को "एक गांव" के रूप में बदल दिया है। इसने तमाम दूरियों एवं विभिन्नताओं, जटिलताओं को समाप्त कर व्यक्ति को वैश्विक व्यक्ति के रूप में स्थापित करने को प्रतिबद्ध है।

संदर्भ गंथ सूची –

1- भारतीय अर्थव्यवस्था – दत्त एवं सुन्दरम, एस चन्द्र एण्ड क०प्रा०लि० नई दिल्ली 2014

2- भारतीय अर्थव्यवस्था – वी०के० पुरी, एस०के०मिश्र, हिमालया पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली 2014

3- गिडडेन ए० (1991) माडर्निटी एण्ड सेल्फ आइडेटिटी, कैम्ब्रिज पालिटी प्रेस

4- मिडडेन, ए० (1919) द क्संीक्वेंसिज ऑफ मार्डनिटी, कैम्ब्रिज पालिटी प्रेस

5- Bhagawati Jagdish 1954, Splintering and Disembodiment of service and Developing Nations, World Economy

6- Goyal K.A. & P.K. Khicha Globalization of Business : Future Challenges, Third Concept. An international Journal of ideas